

ॐ

श्री राज्ञास्तुति

विरचिता

पूज्य पाद श्री स्वामी व्यध्याधर जी

सम्पादक तथा प्रकाशक :

सेवक श्री गोपी नाथ सपरू "मदन" काशमीरी

भानु मुहल्ला, श्री नगर, काशमीर।

प्रथम बार १००० मूल्य १० पैसे

अम्तु मा अमृतं गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय।

देवी दर्शनूक्य प्रताप दि न्यत्रन्
गुण गग पनुन दिम कनन्
क्यानी नाम वली चयतम गच्छू थवुन्
पादन अथव सीत्र करुन् ।
वानी पूज़ तोतायि हन्ज़ दिम सर्ता।
गच्छू ग्वन तू कीर्तन करुन्
यथ यथ जायि उपासन [illegible]वति
आसी गच्छय बुय करुन् ॥२८-२॥ (सपरू)

❀ ॐ नमः श्री जगदम्बायै ❀

ॐ विश्वेश्वरी निखिल देव महर्षि पूज्या,
सिंहासना त्रिनयना भुजगोपवीता।
शङ्खाम्बुजास्यऽमृत कुम्भक पद्म शाखा,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥१॥

✻ भाष ✻

जगत ईश्वरी छि यसदीव यर्ष सारी पूज़ान्,
सूह् आसनस सरूप नाल्य त्र्यन्यत्रछय दारान्।
अथि छुस खड्ग अमृत नूट शङ्ख पद्म आसान्,
राज्ञा छहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठय ॥१॥

जन्माटवीप्रदहने दववह्नि भूता,

तत्पाद पङ्कजरजोगत चेतसां या ।

श्रेयोवतां सुकृतिनां भवपाश भेत्त्री,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥२॥

* भाष *

इमज़न चरण छि अमि सून्दि मनि मन्ज़ दारान्,

ज़न्म वन बनिथ अग्नी छख लादि ज़ालान् ।

भक्तयन इमन युसू बन्दन संसार चटान् ।

राज्ञा द्रहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठय ॥२॥

देव्या ययाऽदनुज शक्तसदुष्टचेतो,
न्यग्भावितं चरणनूपुरशिञ्जितेन ।
इन्द्रादिदेवहृदयं प्रविकासयन्ती,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥३॥

* भाष *

यमि दीवियें असुर दानव दुष्ट महान्,
रूज्नि पादनूय तल रटिथ श्वज्नि युस सपनान् ।
इन्द्राज़ व्यिथि ति दीवन हृदयस सु फ्वलवान्,
राज्ञा द्रहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठय ॥३॥

दुःखार्णवे हि पतितं शरणागतं या,

चोद्धृत्य सा नयति धाम परं दयाब्धि ।

विष्णुर्गजेन्द्रमिव भीत भयापहर्त्री,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥४॥

* भाव *

शरनागतन तू च्यमूत्यन यूस दुःख छु आसान्,

सुय दुःखकरानछ्य मनि दूर म्वुकी छि दिवान ।

भय मञ्ज़ रछान युथ रछान हस्त च्यछ्न भगवान,

राज्ञी छहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठय ॥४॥

यस्या विचित्रमखिलं हि जगत्प्रपञ्चं ,
कुक्षौ विलीनमपि सृष्टिविसृष्टिरूपात् ।
आविर्भवत्यविरतं चिदचित्स्वभावं ,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥५॥

* भाप *

युस् सोर ज़गत रंगू रंगू स्थावर ज़न्गम रूप,
तस सन्ज़ बनिथ सू आसान उत्पत प्रलय रूप ।
व्यथि सुय तिथूय छु नेरान युद ओस प्रलय रूप,
राज्ञा द्रह्य भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठय ॥५॥

यत्पादपङ्कजरज:कणाज प्रसादा,

योगीश्वरैर्विगतकल्मषमानसैस्तत् ।

प्राप्तं पदं जनिविनाशहरं परं सा,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥६॥

* भाष *

यमि सून्ज़ि पादगर्दि सूत्य योगी श्वरव मन,

मल तथ छुलुख अदू न्हयुनुख ज्योन मरन वन्धन ।

प्रसाद न्योख परम धाम प्रोवुख छि रोज़ान,

राज्ञा द्रहय भगवती सूज़िन प्रसन्न पाठ्य ।

यत्पादपङ्कजरजांसि मनोमलानि,
संमार्जयन्ति शिवविष्णुविरिञ्चि देवैः ।
सूयान्यऽपश्चिमतनोः प्रणुतानि माता,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥७॥

* भाष *

यमि सून्ज़ि पाद गर्दि सूत्य मन मल छु हारान् ,
ब्रह्मा विष्ण तू शिव छी तिम पाद च्छारान् ।
पाश्चात जन्म पुरष छी माता च्य नमान् ,
राज्ञा ह्रदय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठ्य ॥७॥

यद्दर्शनामृतनदी महदोघयुक्ता,

संप्लावयत्यखिलभेदगुहास्त्वऽनन्ता ।

तृष्णाहरा सुकृतिनां भवतापहर्त्री,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥८॥

* भाष *

अमृत वानि वरिथूय दर्शन नदी स्वय:

स्वय छय अनन्त त्रिन-भाव गवफूनूय छय यूत सुय ।

सन्ताप त्रेष चट्टूवूनि सत पुरुषनय स्वय,

राज्ञा हृदय भगवतो रूाज़न प्रसन्न पाठ्य ॥८॥

यत्पादचिन्तन दिवाकररश्मिमाला,

चान्तर्बहिष्करणवर्गसरोजषण्डम् ।

ज्ञानोदये सति विकास्य तमोपहर्त्री,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥६॥

* भाष *

जूचू सूर्य सून्ज़् हिषमाल सुमरन छि यस पाद,

अन्ताहकर्ण-बह्यषकर्ण पम्पोष डल पाद ।

वुज़वान छय ज्ञान फूलवान गटकार चटान पाद,

राज्ञा द्रुहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठ्य ॥६॥

हंसस्थिता सकल शब्दमयी भवानी,
वाग्वादिनी हृदय पुष्कर चारिणीया ।
हंसीव हंस रजनीश्वर वह्निनेत्रा,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥७॥

* भाष *

हंसस खसिथ सकल शब्दमयी भवानी,
हृदयि कमलसूय मन्ज़ वसान स्वय वाकवानी ।
सूर्यं चन्द्र अग्नि न्यत्रव स्वय हंसानी,
राज्ञा द्रहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठ्य ॥७॥

यासोम सूर्य वपुषा सततं सरन्ती,
मूलाश्रयात्तडिदिवाऽऽविधिरन्ध्रमीद्या ।
मध्यास्थिता सकल नाडिसमूह पूर्णा,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥८॥

* भाष *

सूर्यचन्द्र रूप हिषज़न व्वथितूय छय फेरान्,
मूलाधार प्यठ् ब्रह ब्रह्मरन्द्रस तान्।
मन्ज़भाग विहि छय सारिनूय नाडियन स्व पूरान्,
राज्ञा द्रहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठ्य ॥८॥

चैतन्य पूरित समस्त जगद्विचित्रा,
मातृ प्रमेयपरिमाणतया चकास्ति ।
या पूर्णवृत्त्यर्हामति स्वपदाधिरूढा,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥६॥

* भाष *

चैतन्य ज़गत युसु छु ज़न रग्गू रग्गू वनानी,
ज़ान ज़ानवुन तू ज़ाननी त्ययि क्रिन्य ब्रज़ानी ।
यस पूर्ण भाव अहं पद पननुय थवानी,
राज्ञी द्रहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठ्य ॥६॥

या चित्क्रमक्रमतया प्रविभाति नित्या,
स्वातन्त्र्य शक्तिरमला गतभेद भावा ।
स्वात्मस्वरूपसुविमर्शपरैः सुगम्या,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥१०॥

* भाष *

कर्म-अकर्म च्यत शक्त युसू द्रह छय बासान् ,
विन भाव किन्य स्व निर्मल सुतन्त्रभाव सान ।
इम आत्म च्यनतन करान तिम छी लबान थान् ,
राज्ञा द्रहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठ्य ॥१०॥

याकृत्य पञ्चकनिभालनलालसैस्तैः,

सन्दृश्यते निखिल वेद्यगतापि शश्वत् ।

सान्तर्धृता परप्रमातृपदं विशन्ती,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥११॥

* भाष *

इम छी लगिथ व्यमर्शस मन्ज़ पञ्चकृतूकिस् ,

प्रथ कुनि मनज़ वुछान छिस प्रथ कुनि वुछान छिस् ।

हुष्यार छय पद रटिथ स्वय शक्ति छय गुण छिस,

राज्ञा द्रहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठ्य ॥११॥

याऽनुत्तरात्मनि पदे परमाऽमृताब्धौ,
स्वातन्त्र्यशक्ति लहरिविग्रहिः सरन्ती ।
संलीयते स्वरसतः स्वपदे सभावा,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥१२॥

* भाष *

पानि पान थानू पनने य्वसू व्वथि तिच्छ्य ज़न् ,
यिथू व्वुथि तरन्ग अमृत सूत्य भरिथूय समन्द्रन ।
व्ययि सूत्य निवान छि सोरुय फीरिथ त्वतुय ज़न,
राज्ञा द्रहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठ्य ॥१२॥

मेरोः सदैवहिदरीषु विचित्रवाग्भि,

गायान्ति या भगवतीं परिवादिनीभिः ।

विद्याधराहि पुलकाङ्कित विग्रहाः सा,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥१३॥

* भाष *

न्यती समीरच्चयन ग्वफन नाना प्रकार गीत्,

ग्यवान छि च्ये भगवती सेतार स्वर सूत्य ।

रूमू हर्ष सान ठ्यध्याधर गायन करान कूत्य,

राज्ञा द्वहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठ्य ॥१३॥

राज्ञी सदा भगवती मनसा स्मरामि ॥
राज्ञी सदा भगवती वचसा गृणामि ॥
राज्ञी सदा भगवती शरसा नमामि ॥
राज्ञी सदा भगवती शरणं प्रपद्ये ॥१७॥

* भाष *

राज्ञा द्रह्य भगवती मनू किन्य स्वरान छुस ॥
राज्ञा द्रह्य भगवती व्यवि किन्य परान छुस ॥
राज्ञा द्रह्य भगवति कल किन्य नमान छुस ॥
राज्ञा द्रह्य भगवती आमुत शरण छुस ॥

राज्ञ्याः स्तोत्रमिदं पुण्यं यः पठेद्भक्तिमान्नरः
नित्यं देव्याः प्रसादेन शिवसायुज्यमाप्नुयात् ॥

इति श्री जगदम्बास्तुति-राजानक-विद्याधर विरचिता शुभदा वोभूयात ॥ ॥ इति शिवम् ॥

कृतज्ञता

ज्ञात होंवे कि श्री स्वामी विध्याधर जी महाराज विरचिता श्री राज्ञास्तुति की काशमीरी भाषा में जो टीका श्री महादेवजी ने की है उसके अतियुक्त सेवक ने अपनी बुद्धि अनुसार काशमीरी भाषा में अनुवाद किया है। जिसको देवनागरी भाषा में प्रकाशित किया।

इस कार्य में श्रीमान नील कण्ठ जी सेवक श्री स्वामी विध्याधर जी का मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। स्वामी जी के सेवक और राज्ञा-भगवती प्रेमियों से आशा है कि अगर मेरी कोई त्रुटी रह गई हो तो क्षमा करें। (सपरू) १३-७-६५

शक्ति प्रिंटिंग प्रैस जम्मू में छपकर प्रकाशित की।